Chapter 3

अर्थशास्त्र का परिचय

Manoj Kumar, Department of Economics
Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

अर्थशास्त्र कर अर्थ :–

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान कि वह शाखा है जिसमे वस्तु एवं सेवा के उत्पादन, उपभोग, विनिमय और वितरण का अध्ययन किया जाता है उसे अर्थशास्त्र कहते है

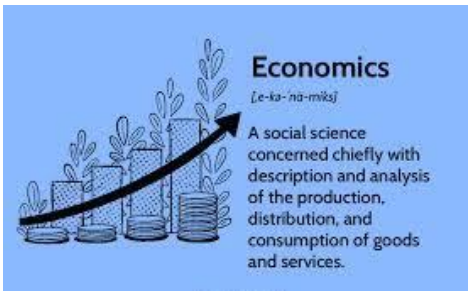

अर्थशास्त्रः– क्षेत्र और प्रकृति :–

क्षेत्र (Scope) अर्थशास्त्र दो प्रमुख शाखाओं में बाँटा गया है :–

सूक्ष्म अर्थशास्त्र (Micro Economics): यह व्यक्तिगत इकाइयों जैसे उपभोक्ता, उत्पादक, और बाजारों के व्यवहार का अध्ययन करता है।

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) : यह संपूर्ण अर्थव्यवस्था जैसे राष्ट्रीय आय, मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, आर्थिक वृद्धि आदि का अध्ययन करता है।

प्रकृति (Nature) :–

अर्थशास्त्र एक विज्ञान के रूप में :–

अर्थशास्त्र में, हम आर्थिक सिद्धांतों और मॉडलों का उपयोग करके आर्थिक घटनाओं का अध्ययन

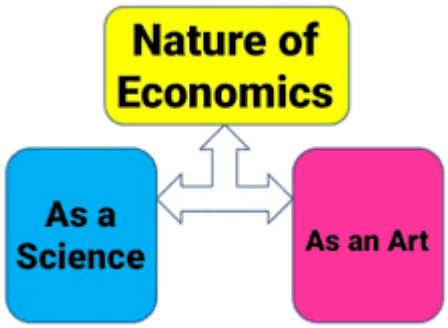

करते हैं, और इन सिद्धांतों और मॉडलों का परीक्षण करते हैं.

यह 'कारण और प्रभाव' संबंधों का विश्लेषण करता है, जैसे कि कीमतों में वृद्धि से मांग में कमी.

अर्थशास्त्र में, हम भविष्य की आर्थिक स्थितियों की भविष्यवाणी करने के लिए सांख्यिकीय विधियों और मॉडल का उपयोग करते हैं.

अर्थशास्त्र एक कला के रूप में :–

अर्थशास्त्र में, हम आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न नीतियों और रणनीतियों का उपयोग करते हैं, जैसे कि गरीबी और बेरोजगारी को कम करना.

यह व्यक्तियों और समाजों के आर्थिक कल्याण को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों को लागू करता है.

अर्थशास्त्र एक कला है, क्योंकि यह आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए रचनात्मक और नवीन समाधान खोजने में शामिल है.

अर्थशास्त्र, एक सामाजिक विज्ञान है जो मानव की आवश्यकताओं और सीमित संसाधनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

इसमें सकारात्मक और मानकात्मक दोनों प्रकार की बातें होती हैं:

सकारात्मक अर्थशास्त्र: ''क्या है?'' (जैसे – बेरोजगारी दर क्या है?)

ISBN: 978-93-343-6940-3

मानकात्मक अर्थशास्त्रः ''क्या होना चाहिए?'' (जैसे – सरकार को बेरोजगारी कम करने के लिए क्या करना चाहिए?)

2. बुनियादी आर्थिक समस्याएँः अभाव और विकल्प

अभाव :– संसाधन सीमित हैं लेकिन इच्छाएँ अनंत। यही समस्या अर्थशास्त्र की मूलभूत समस्या है।

विकल्प :– जब संसाधन सीमित होते हैं, तो हमें यह तय करना होता है कि किस जरूरत को पहले पूरा किया जाए। यही विकल्प का सिद्धांत है।

3. सूक्ष्म और समष्टि अर्थशास्त्र :–

सूक्ष्म अर्थशास्त्र :– यह व्यक्तिगत उपभोक्ताओं और उत्पादकों के निर्णयों का अध्ययन करता है। उदाहरणः कीमत का निर्धारण, माँग और आपूर्ति, उपभोक्ता संतोष और एक व्यक्तिगत उपभोक्ता का अध्ययन।

समष्टि अर्थशास्त्र :– यह देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित है।

उदाहरणः GDP, मुद्रास्फीति, राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति और राष्ट्रीय आय का अध्ययन।

4. आर्थिक विश्लेषण की विधियाँ :–

i) आगमनात्मक विधि :–

यह विश्लेषण व्यवहारिक तथ्यों और आंकड़ों से शुरू होता है और फिर एक सामान्य सिद्धांत की ओर बढ़ता है।

उदाहरण :– कई देशों में बेरोजगारी से संबंधित आंकड़ों का अध्ययन कर बेरोजगारी के कारणों का सामान्य सिद्धांत बनाना।

ii) निगमनात्मक विधि :–

यह सैद्धांतिक धारणा या पूर्वग्रहों से शुरू होकर निष्कर्ष निकालती है।

उदाहरणः यदि यह मान लिया जाए कि "मांग और आपूर्ति मूल्य को निर्धारित करते हैं", तो विभिन्न परिस्थितियों में मूल्य कैसे बदलता है यह निकाला जाता है।

iii) स्थैतिक विश्लेषण :–

इसमें समय का कोई प्रभाव नहीं माना जाता। सभी चीजें स्थिर अवस्था में मानी जाती हैं।

उदाहरणः किसी एक बिंदु पर माँग और आपूर्ति का संतुलन।

iv) गतिक विश्लेषण :–

इसमें समय का प्रभाव शामिल होता है। यह यह बताता है कि समय के साथ आर्थिक तत्वों में कैसे परिवर्तन आता है।

5. कुल, औसत और सीमांत राशियों की अवधारणा :–

i) **कुल राशि :–**

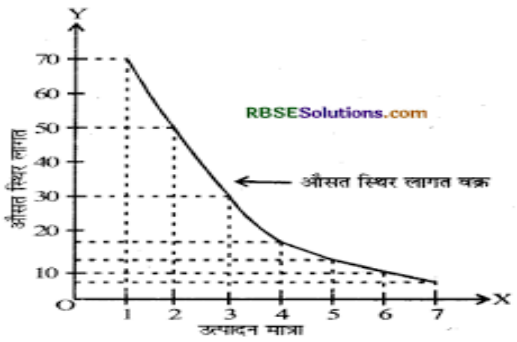

यह किसी आर्थिक चर का समग्र मूल्य है। उदाहरणः कुल उत्पादन, कुल लागत ।

ii) **औसत राशि :–**

कुल राशि को एकक संख्या (unit) से विभाजित करने पर औसत राशि मिलती है।

iii) **सीमांत राशि** :–

जब किसी एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन किया जाता है, तो कुल राशि में जो परिवर्तन होता है, उसे सीमांत राशि कहते हैं।

उदाहरणः सीमांत लागत , सीमांत लाभ ।

ISBN: 978-93-343-6940-3